No. of Printed Pages : 3

एम.एच.डी.-1

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

04505

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2014

एम.एच.डी.-1 : हिन्दी काव्य-1

(आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *कुल **चार** प्रश्नों के उत्तर देने हैं । **प्रथम** प्रश्न **अनिवार्य** है । शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : *2×10=20*

(क) पिउ बियोग अस बाउर जीऊ ।
पपिहा निति बोले 'पिउ पिऊ' ।।
अधिक काम दाघे सो रामा ।
हरिलेइ सुवा गएउ जिउ नामा ।।
बिरह बान तस लाग न डोली ।
रकत पसीज, भीजि गइ चोली ।।
सूखा हिया, हार भा भारी ।
हरे हरे प्रान तजहि सब नारी ।।
खन एक आव पेट महँ साँसा ।
खनहिं जाइ पिउ, होई निरासा ।।
पवन डोलावहिं सीयहिं चोला ।
पहर एक समुझहिं मुख बोला ।।
प्रान पयान होत को राखा ?
को सुनाव पीतम कै भाखा ?

(ख) धूत कहौ, अवधूत कहौ,
रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ ।
काहूकी बेटीसों बेटा न ब्याहब,
काहूकी जाति बिगार न सोऊ ।
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को,
जाको रूचै सो कहै कछु ओऊ ।
माँगि कै खैबो, मसीतको सोइबो,
लैबेको एकु न दैबेको दोऊ ।

(ग) दृग उरझत टूटत कुटुम,
जुरत चतुर चित प्रीति ।
परति गाँठि दुरजन हियै
दई, नई, यह रीति ।।

(घ) झलकै अति सुन्दर आनन गौर,
छके दृग राजत काननि छूवै ।
हँसि बोलन मैं छबि फूलन की
बरषा उर ऊपर जाति ह्वै ।
लट लोल कपोल कलोल करै,
कल-कंठ बनी जलजावलि द्वै ।
अंग-अंग तरंग उठै दुति की,
परिहै मनौ रूप अबै धर च्वै ।।

2. गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति-पदावली का मूल्यांकन कीजिए । *10*

3. वर्तमान सन्दर्भों में कबीर की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए । *10*

4. पद्मावत में चित्रित लोकजीवन को रेखांकित कीजिए । *10*

5. सूर-काव्य में निहित प्रेमानुभूति के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए । *10*

6. तुलसी के काव्य-सौन्दर्य का विवेचन कीजिए । *10*

7. घनानंद की प्रेम-सम्बन्धी दृष्टि का आकलन कीजिए । *10*

8. पद्माकर की कविता में प्रकृति और लोक जीवन सम्बन्धी चित्रण की विशेषताएँ बताइए । *10*